रंजन गोगोई के फ़ैसले और पेगासस जासूसी

मनोज तिवारी

मोदी सरकार पर कई पत्रकारों और नेताओं के अलावा सुप्रीम कोर्ट के जजों की जासूसी का आरोप लगा है। जिसमें पूर्व चीफ़ जस्टिस रंजन गोगोई का नाम भी है। गोगोई को इस समय भाजपा राज्यसभा का सदस्य बना चुकी है। गोगोई के बतौर चीफ़ जस्टिस कार्यकाल के फ़ैसलों पर नज़र डालें तो सारा खेल समझ में आ जाता है।

अयोध्या में बाबरी मस्जिद पर सुप्रीम कोर्ट के विवादास्पद फ़ैसले को इस देश के ग़ैर भाजपाई-ग़ैर संघी हिन्दू भूले नहीं हैं। अब समझ में आ रहा है कि गोगोई ने वो विवादास्पद फ़ैसला क्यों दिया होगा। उस फ़ैसले ने हिन्दुओं का नहीं इस देश का नुक़सान किया है। बड़ी मेहनत से हमारे पुरखों ने देश में जो भाईचारा, आपसी सौहार्द क़ायम किया था, इस फ़ैसले ने देश की उस धर्मनिरपेक्षता पर प्रहार किया है। अयोध्या के अलावा जस्टिस लोया की रहस्यमय मौत, राफेल डील, ईवीएम वीवीपैट मामले पर गोगोई के फ़ैसले उनकी निष्पक्षता पर अब सवाल बन गए हैं।

ऐसे हुई थी शुरूआत

एक महिला देश के एक संवैधानिक पद के शीर्ष पर बैठे एक बहुत ही शक्तिशाली व्यक्ति पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाती है। महिला की नौकरी चली जाती है। यही नहीं उसके पति और एक अन्य रिश्तेदार की नौकरी भी चली जाती है। फिर जाँच होती है और आरोपी न्यायधीश खुद बेंच की अध्यक्षता करते हुए खुद मामले की सुनवाई करते हैं और खुद को निर्दोष करार दिए जाने का फैसला सुनाते हैं। केस खत्म...

आरोप सही या ग़लत

आरोप या तो गलत थे या फिर सही।

जब कोर्ट ने आरोप को गलत बताते हुए फैसला दिया इसका मतलब है महिला ने गलत आरोप लगाए थे। महिला चुंकि खुद सर्वोच्च न्यायालय की कर्मी थी तो उसे मुख्य न्यायाधीश पर झूठे आरोप लगाने का अंजाम पता न हो ऐसा संभव नहीं। बावजूद इसके उसने आरोप लगाए। फिर जब उसके आरोप गलत साबित हो गए तो उसे सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश पर झूठे आरोप लगाने के लिए सजा होनी चाहिए थी। नहीं हुई...

मुझे इससे तब बहुत आश्चर्य हुआ था। लेकिन जब सजा मिलने की जगह महिला को फिर से नौकरी पर बहाल कर लिया गया तो मुझे और भी अजीब लगा। यही नहीं उसके पति और रिश्तेदार को भी नौकरी वापस मिल गयी। एक सामान्य नागरिक के तौर पर मैं इसे तब भी आसानी से समझ नहीं पा रहा था।

इन सबके बीच एक शख्स ने इस महिला पर सुप्रीम कोर्ट में नौकरी दिलाने के नाम पर 50 हजार रूपये रिश्वत लेने का मुकदमा भी दर्ज करा दिया। लेकिन यौन शोषण के मामले में फैसला आने के बाद आश्चर्यजनक रूप से उस व्यक्ति ने अपना केस वापस ले लिया। दिल्ली पुलिस ने मुकदमे का क्लोजर रिपोर्ट दाखिल किया जिसे अदालत ने स्वीकार करते हुए केस खत्म कर दिया।

अब ये मामला बीते दिनों की बात है। इस बीच महिला, उसके पति और रिश्तेदार अपनी पुरानी नौकरी में फिर से बहाल होकर काम कर रहे हैं। तब के मुख्य न्यायाधीश जिनपर आरोप था वो रिटायर होकर अब भाजपा के राज्यसभा सांसद हैं।

कल से यह पुराना मामला फिर से सुर्खियों में है क्योंकि खुलासा हुआ है कि महिला के तीन फोन नंबरों और परिवार के अन्य लोगों को जोड़कर कुल 11 फोन नंबरों को उसी अवधि में इज़रायली सॉफ़्टवेयर पेगासस द्वारा जासूसी के लिए टारगेट किया गया था।

अशोक लवासा की जासूसी

क्या अशोक लवासा की इसलिए जासूसी करवाई गयी क्योकि वह %ईवीएम-वीवीपैट में खामियां ढूंढने में दिलचस्पी दिखा रहे थे?

पेगासस से जुड़े खुलासे में चुनाव आयोग के पूर्व अधिकारी अशोक लवासा का भी नाम आया है आप शायद अशोक लवासा को भूल गए होंगे मै आपको याद दिला देता हूँ।

अशोक लवासा हरियाणा कैडर के (बैच 1980) के रिटायर्ड आईएएस अधिकारी हैं. लवासा का 37 सालो का प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कैरियर रहा है वह भारत के चुनाव आयुक्त बनने से पहले वो 31 अक्तूबर 2017 को केंद्रीय वित्त सचिव के पद से सेवा-निवृत्ति हुए थे. इसके बाद उन्हें चुनाव आयुक्त बनाया गया।

चुनाव आयुक्त अशोक लवासा वही है जिन्होंने लोकसभा चुनाव 2019 के दौरान आचार संहिता के कथित तौर पर उल्लंघन के मामले में पीएम मोदी और बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह के खिलाफ शिकायतों वाले चुनाव आयोग के क्लीन चिट देने के फैसले पर असहमति जताई थी. उन्होंने पीएम मोदी और अमित शाह से जुड़े पांच मामलों में क्लीन चिट दिए जाने का विरोध किया था। ये मामला वर्धा में एक अप्रैल, लातूर में नौ अप्रैल, पाटन और बाड़मेर में 21 अप्रैल तथा वाराणसी में 25 अप्रैल को हुई रैलियों में मोदी के भाषणों से संबंधित था।

पीएम मोदी और बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह के खिलाफ मिली आचार संहिता उल्लंघन की शिकायतों की जांच के लिए गठित समिति में मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा, अशोक लवासा और सुशील चंद्रा शामिल थे। मोदी और शाह को क्लीन चिट दिए जाने पर चुनाव आयुक्त लवासा का मत बाकी दोनों सदस्यों से अलग था और वह इन आरोपों को आचार संहिता के उल्लंघन के दायरे में मान रहे थे। लेकिन बहुमत से लिए गए फैसले में दोनों के आचरण को आचार संहिता का उल्लंघन नहीं मानते हुए क्लीनचिट दे दी गई। सिर्फ इतना ही नहीं लवासा के मत को भी रिकॉर्ड पर नहीं लिया गया। लवासा चाहते थे कि उनकी अल्पमत की राय को रिकॉर्ड किया जाए. उनका आरोप है कि उनकी अल्पमत की राय को दर्ज नहीं किया जा रहा है,

जब पुणे के आरटीआई कार्यकर्ता विहार दुर्वे ने यह जानने के लिए एक आरटीआई लगाई कि लवासा की इन टिप्पणियों में आखिर क्या लिखा है ? तो उसका जवाब देते चुनाव आयोग ने आरटीआई अधिनियम के तहत चुनाव आयुक्त अशोक लवासा की असहमति वाली टिप्पणियों का खुलासा करने से इनकार करते हुए कहा कि यह छूट-प्राप्त ऐसी सूचना है जिससे किसी व्यक्ति का जीवन या शारीरिक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है

जैसे ही पता चला कि लवासा ने चुनाव आयुक्त के पद पर रहते हुए मोदी के लिए प्रतिकूल टिप्पणियां लिखी है उनके विरुद्ध पूरे प्रशासनिक अमले को सक्रिय कर दिया गया तुरंत लवासा की पत्नी, बेटे और बहन को आय से अधिक संपत्ति और इनकम घोषित न करने के आरोपों में नोटिस भेज दिया गया।

लेकिन इससे भी मोदी सरकार का जी नही भरा.. फिर इस बात की जांच कराई गयी कि बिजली मंत्रालय ने अपने सभी पीएसयू के चीफ विजिलेंस ऑफिसरों को यह पता लगाने का आदेश दिया कि कहीं लवासा के बिजली मंत्रालय में 2009 से लेकर 2013 के कार्यकाल के दौरान कुछ कंपनियों को फायदा तो नहीं पहुंचाया गया।

नवम्बर 2019 में पूर्व आईएएस ऑफिसर के. गोपीनाथन ने लवासा के सम्बन्ध में बहुत महत्वपूर्ण बयान दिया था। गोपीनाथन ने कहा कि लवासा को 'सरकार इसलिए निशाना बना रही है' क्योंकि उन्होंने 'ईवीएम-वीवीपैट में खामियां ढूंढने में दिलचस्पी दिखाई थी।' गोपीनाथन ने ट्वीट करके लिखा, 'एक चुनाव आयुक्त जिसने ईवीएम-वीवीपैट की प्रक्रिया में खामियां ढूंढने में दिचलस्पी दिखाई, उसे सरकार ने निशाना बनाया। हम अभी भी चुप हैं और उन्हें उनकी छवि खराब करने और बदनाम करने दे रहे हैं।'

अब आप समझ ही सकते है कि अशोक लवासा को क्यों सर्विलांस के लिए चुना गया था !

मोदी कह रहे तो ठीक ही होगा...लोग खुद मरे, ऑक्सीजन की कमी से नहीं

आलोक शुक्ला

आज सत्य का एक बार फिर से उदय हुआ है!

मोदी सरकार ने राज्यसभा में कहा है कि देश में ऑक्सीजन की कमी से किसी के मरने की कोई सूचना नहीं है।

गनीमत है, उसने ये नहीं कहा कि कोरोना से कोई मरा ही नहीं।

हालांकि, वह चाहती तो कह देती कि यहां कोरोना आया ही नहीं। और यह देश मान भी लेता। आखिर किसे लोया बनने का शौक चर्राया है।

लेकिन, धन्य है सच्ची, ईमानदार, बहादुर और धर्मनिष्ठ सरकार, जो पूरे ईमान और बहादुरी से सिर्फ सच्चाई के रास्ते पर चलते हुए अपनी प्रजा का ख्याल रखती है तथा सिर्फ और सिर्फ सच ही बोलती है! झूठ तो रत्तीभर भी नहीं! सच में, सच बोलने में इसका कोई सानी नहीं!

तो हे असत्य नारायण के भक्तगणों! ये तुम्हारे प्रसन्न होने, नाचने-गाने, दिये जलाने और पटाखे फोड़ने का समय है कि तुम्हारे ही सौभाग्य से और इस पवित्र भारतभूमि के परम सौभाग्य से पूरे साढ़े पांच सौ साल बाद ऐसी सच्ची, सच्चरित्र, शक्तिशाली और धर्मनिष्ठ सरकार मिली है!

'ऑक्सीजन की कमी से कोई नहीं मरा', कोरोना की दूसरी लहर में हुई मौतों पर बोली केंद्र सरकार

लाइव हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
Last Modified: Tue, Jul 20 2021, 18:38 PM IST

अभी कोरोना का खतरा टला नहीं है। इस बीच केंद्र सरकार की तरफ से मंगलवार को कहा गया है कि कोविड-19 की दूसरी

व्यंग्य हिस्सेदार राजा प्रजा के लिए ज़्यादा सही

दिनेश शर्मा

हुआ यूंकि एक समय की बात है एक बड़े विशाल राज्य का राजा चतुर था वो जानता था सारी की सारी आवाम अप्रत्यक्ष रूप से कर चुकाती है इस आधार पर सारी जनता तक कुछ न कुछ पहुंचना चाहिए। उसे कर चुकाने और न चुकाने के आभासी जाल में फांसना ठीक नहीं । सब ठीक चल ही रहा था तो राजा अपनी नीतियों को धीरे धीरे लागू करने की जोड़ गांठ करता रहता था रातों रात अच्छे दिन लाने के सपने बेचने की जरूरत नहीं थी।

होता ये कि चतुर राजा जनता के कर से विकास रूपी केक काटता अब क्यूंके राजा चतुर था तो केक में से पहले जनता को देने की बात करते हुए केक के छोटे छोटे टुकड़े करके आवाम में बांट देता और आखरी बड़ा हिस्सा अपने पास रख लेता। आवाम अपना अपना हिस्सा लेती जाती और घर चली जाती। अंत तक राजा के पास कोई न बचता और बड़ा हिस्सा राजा के पास रह जाता। उसी हिस्से से आवाम ने अपने बच्चे पढ़ाये लिखाये, बड़ी नौकरियों में हिस्सेदारी की , खेती किसानी में नई मशीनें ट्रैक्टर का उपयोग शुरू हुआ, पक्के मकान बनवाये, सड़को पे कारों के जखीरे तैरने लगे, खूब तरक्की की, कंप्यूटर लैप टॉप मोबाइल इंटरनेट तक पुरानी अवाम की नई नस्लें पहुंची। धीरे-धीरे लोग खाये पिये अघाये हो गए।

अब सूचनाक्रांति का नया दौर था, किसी रोज़ किसी ने राजा के आखरी में बचे केक की फ़ोटो को इंटरनेट पर डाल दिया। लोगो को बताया गया के उनका विकास और कृपा वहाँ अटकी है, रात दिन के प्रलाप से अब लोगो को भी लगने लगा के हमारा विकास तो हुआ नहीं है। हमें तो केक के छोटे टुकड़े मिले। क्रांति शुरू हुई राजा बदल गया । अब लोगो को लगा के केक का बड़ा टुकड़ा मिलेगा। लोग खुश थे , जबरदस्त भीड़ लगी। संतुष्ट लोगो ने

भी बड़े टुकड़े की लालच में नए राजा का समर्थन किया। अब पहले से अर्जित राज्य की साधन संपत्ति के सौदे होने लगे। और विकास रूपी पहले से बड़ा केक मंगवाया गया। अवाम को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर देने वालो में बांटा गया उसी आधार पर पंक्तियां बनाई गई। खैर सभी खुश थे।और इंतज़ार था कि बड़ा टुकड़ा मिलेगा।

नए राजा ने एलान किया केक के टुकड़ों की पहले निशानदेही होगी ताकि सब मे बराबर हिस्से किये जा सके। किसी को एक तौला भी कम नही मिलेगा।

कर्णभेदी शोर उठा। फिर राजा ने कहा जब तक केक में निशानदेही होती है आप अपने कर का ब्यौरा और देश के लिए अपने योगदान की लिखित प्रति जमा करवा दे।

5 वर्ष तक निशान देही चलती रही। छटे वर्ष राजा ने और 5 वर्ष इन्तज़ार को कहा, तब तक आवाम थक चुके थी , परंतु सोचा कि चलो अब तो केक का बड़ा टुकड़ा मिल ही जायेगा।

उधर राजा उछल उछल कर कपड़े बदल बदल कर केक में बराबर टुकड़ो की निशानदेही करता रहा।

एक दिन वो भी आया कि मुनादी हुई कि आज केक के टुकड़े होंगे।

केक 6 वर्ष पुराना हो चुका था पर एक उम्मीद थी बराबर बराबर बड़े बड़े टुकड़े मिलने की। राजा ने कहा प्लास्टिक के चाकू से केक नहीं काटा जाएगा ये हमारी संस्कृति के विरुद्ध है। हम अपनी पूर्वजो की तलवार से केक काटेंगे। निशानदेही भी ठीक से हुई नही थी राजा के मंत्रियों ने आगाह किया। परंतु राजा को अपने कौशल पे पूरा भरोसा था। उसने तलवार मंगवाई , तलवार भारी थी और उपयोग में न होने के कारण चाकू से भी कम धार थी । कुल मिलाकर भोथरी तलवार थी।

राजा ने मूछों पर ताव देते हुए भोथरी तलवार केक पर दे मारी। भला भोथरी तलवारों से केक कटा करते है, केक के दो टुकड़े हुए और उस भोथरी तलवार से चिपके हुए हवा में उछले और ध.....प्प की आवाज के साथ दोनों टुकड़े उल्टे होकर जमीन पर आ गिरे । सभा मे शांति छा गयी। केक के ऊपर लगी चेरी ही केक में असली थी जो राजा के सर के ऊपर से होते हुए पीछे लपक ली गई। राजा ने तुरंत स्थिति को संभालते हुए कहा कि देखो मैंने कहा था न " ना खाऊंगा ना खाने दूंगा" अब इसे कोई भी नहीं खा सकता। मंत्रियों ने सभा में लोमहर्षक ध्वनि की।

अब राजा ने कहा मैं इससे भी बड़ा केक मंगवाऊंगा आप चिंता मत करिए ये कहते हुए कर बढ़ा दिए गए। आवाम की हालत खस्ता हो चुकी थी वो मन मारे घर की और लौटने लगे। घर लौटते हुए वो सोच रहे थे कि भाई अब तो छोटा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा, और वो दो आदमी कौन थे जो राजा के पीछे खड़े थे और उस असली चेरी को लपक ले गए?

समझिए इस बात को निष्कपटता सही निर्णय की गारंटी नहीं होती। कोई आदमी निष्कपट और ईमानदार होते हुए भी गलत हो सकता है। और आप क्या सोच रहे है कि कहानी का राजा तो निष्कपट भी नहीं था, निरा मूर्ख था ! सही सोच रहे है !